



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1
PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY



सं० 67]
No. 67]

नई दिल्ली, मंगलवार, अप्रैल, 1 1997/चैत्र 11, 1919
NEW DELHI, TUESDAY, APRIL, 1 1997/CHAITRA 11, 1919

वाणिज्य मंत्रालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 31 मार्च, 1997

प्रारम्भिक जांच परिणाम

विषय :—यू. एस. ए., थाईलैण्ड और कोरिया गणराज्य मूल के या वहां से निर्यातित एक्रिलिक फाइबर के आयातों में संबंधित प्रति-पाटन जांच प्रारम्भिक जांच-परिणाम।

सं. 21/ए.डी.डी./96 :—वर्ष 1995 में यथामंशोधित सीमा-शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 और उसके सीमा-शुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं पर प्रतिपाटन शुल्क की पहचान, आकलन और वसूली एवं क्षति का निर्धारण) नियम, 1995 को देखते हुए—

क. प्रक्रिया

2. नीचे वर्णित जांच प्रक्रिया का अनुसरण किया गया है:

- (क) निर्दिष्ट प्राधिकारी को (जिसे इसके बाद प्राधिकारी कहा जाएगा) उपरोक्त नियमों के अंतर्गत घरेलू उद्योग की ओर से मै. इंडियन एक्रिलिक्स लिमिटेड और पशुपति एक्रिलोन लिमिटेड से एक लिखित आवेदन प्राप्त हुआ, जिसमें यू. एस. ए., थाईलैण्ड तथा कोरिया आर. पी. मूल के अथवा वहां से निर्यात किए गए एक्रिलिक फाइबर के पाटन का आरोप लगाया गया था।
- (ख) आवेदन की प्रारम्भिक पुनरीक्षा में कुछ कमियां प्रकट हुईं जिनका संकेत याचिकाकर्ताओं को दिया गया।
- (ग) प्राधिकारी ने, याचिकाकर्ताओं द्वारा प्रस्तुत किए गए पर्याप्त प्रमाणों के आधार पर यू एस ए, थाईलैण्ड और कोरिया आर. पी. के विरुद्ध जांच शुरू करने का निर्णय लिया। प्राधिकारी ने नियमों के उपनियम 5 (5) के अनुसार जांच की कार्यवाही शुरू करने से पहले पाटन के आरोप की प्राप्ति के विषय में इन देशों के दूतावासों को सूचित किया।
- (घ) प्राधिकारी ने 13 मितम्बर, 1996 को एक सार्वजनिक सूचना जारी की, जिसे भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित किया गया, जिसके द्वारा यू एस ए, थाईलैण्ड और कोरिया आर पी मूल के अथवा वहां से निर्यातित एक्रिलिक फाइबर, के आयात से संबंधित “एंटी डम्पिंग” जांच शुरू की गई। एक्रिलिक फाइबर सीमाशुल्क अधिनियम 1975 की अनुसूची 1 के 550330 सीमाशुल्क शीर्षक के अंतर्गत वर्गीकृत है।

- (ड) प्राधिकारी ने सार्वजनिक सूचना की प्रति ज्ञात निर्यातकों (जिनका विवरण याचिकाकर्ताओं द्वारा उपलब्ध करवाया गया) और उद्योग संगठनों को भेजी और नियम 6(2) के अनुसार उन्हें लिखित रूप में उनके दृष्टिकोण की जानकारी देने का अवसर दिया।
- (च) प्राधिकारी ने भारत में एक्रिलिक फाइबर के ज्ञात आयातकों को सार्वजनिक सूचना की प्रति भेजी और उन्हें सलाह दी कि पत्र मिलने के चालीस दिनों के भीतर लिखित में अपने दृष्टिकोण से अवगत करवाएं।
- (छ) केन्द्रीय उत्पाद एवं सीमाशुल्क बोर्ड (सीबीईसी) से भी अनुरोध किया गया कि जांच की अवधि के दौरान की संगत सभी "बिल आफ इन्ट्रीज" की प्रतियां उपलब्ध कराई जाएं। लेकिन सी बी ई सी से कोई सूचना प्राप्त नहीं हुई।
- (ज) प्राधिकारी ने उपर्युक्त नियम 6(3) के अनुसार याचिका की प्रतियां सभी ज्ञात निर्यातकों और यू एस ए, थाईलैंड और कोरिया के दूतावासों को भी प्रदान की। संगत सूचना को प्रकाश में लाने के लिए प्राधिकरण ने निम्नलिखित ज्ञात निर्यातकों को प्रश्नावली भेजी :
- (1) आइटेक इंडस्ट्रीज इंक यू एस ए ;
 - (2) मोन्सान्तो फाइबर्स, यू एस ए ;
 - (3) हानिल सिन्थेटिक फाइबर कंपनी लिमिटेड, कोरिया आर पी ;
 - (4) (4) टेक्वोंग इंडस्ट्रीयल कंपनी लिमिटेड, कोरिया आर पी;
 - (5) थाई एक्रिलिक फाइबर कंपनी लिमिटेड, थाईलैंड
- मैसर्स साइटेक इंडस्ट्रीज इंक, (मोन्सान्तो केमिकल्स आफ इंडिया के माध्यम से) और थाई एक्रिलिक फाइबर ने समय बढ़ाने का निवेदन किया, जिसके लिए दो सप्ताह की अनुमति दी गई। प्रश्नावली का उत्तर निम्नलिखित द्वारा पेश किया गया :
- (1) साइटेक इंडस्ट्रीज इंक, यू एस ए;
 - (2) थाई एक्रिलिक फाइबर कंपनी लि. थाईलैंड ;
- (झ) यू एस ए, थाईलैंड और कोरिया के नई दिल्ली स्थित दूतावासों को नियम 6(2) के अनुसार जांच के संबंध में सूचना दी गई जिसमें से अनुरोध किया गया कि वे अपने देश के निर्यातकों/उत्पादकों को प्रश्नावली का निर्धारित समय के अंदर उत्तर देने की सलाह दें। निर्यातकों को भेजी गई याचिका और प्रश्नावली की प्रतियां भी दूतावासों को भेजी गईं :
- (ञ) भारत में एक्रिलिक फाइबर के निम्नलिखित आयातकों को प्रश्नावली भेजी गई, जिसमें नियम 6(4) के अनुकूल आवश्यक सूचना मांगी गई :
- (1) वर्धमान स्पिनिंग एण्ड जनरल मिल्स, लुधियाना ;
 - (2) नाहर स्पिनिंग मिल्स लि., लुधियाना ;
 - (3) माल्खाकाटन स्पिनिंग मिल्स लि., लुधियाना;
 - (4) राजस्थान स्पिनिंग एंड वीविंग मिल्स लि., नई दिल्ली ;
 - (5) विन्सम टैक्सटाइल इंडस्ट्रीज लि., चण्डीगढ़ ;
 - (6) सिद्धार्थ सुपर स्पिनिंग मिल्स लि., नई दिल्ली;
 - (7) भिवानी टैक्सटाइल मिल्स, भिवानी ;
 - (8) आदिनाथ टैक्सटाइल्स लि. लुधियाना ;
 - (9) श्रुति टैक्सटाइल मिल्स, उदयपुर ;
 - (10) वर्धमान स्पिनिंग एण्ड जनरल मिल्स, लुधियाना ;
- (ट) घरेलू उद्योग से संबंधित सूचना, मै. इन्डियन एक्रिलिक लि. पशुपति एक्रिलिन लि. और मै. कान्सोलिडेटेड फाइबर्स एण्ड केमिकल्स लि. (इसके उपरान्त क्रमशः इंडियन एक्रिलिक्स, पशुपति और कान्सोलिडेटेड उल्लेख किया जाएगा) से प्राधिकरण द्वारा मांगी गई सूचना स्पेच्छा में पेश की गई :
- (ठ) प्राधिकारी ने मौका मुआइना करने के लिए पशुपति के परिसर में अधिकारियों का एक दल भेजा :
- (ड) उत्पादन की इष्टतम लागत और निर्माण तथा भारत में एक्रिलिक फाइबर की बिक्री लागत का जायजा लेने के लिए एक लागत जांच भी की गई। यह जांच सामान्य स्वीकृत लेखा सिद्धान्तों (जी ए प पी) तथा याचिकाकर्ताओं द्वारा पेश की गई सूचना पर आधारित थी। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना भी था कि क्या डम्पिंग मार्जिन से कम एन्टी डम्पिंग शुल्क घरेलू हानि को दूर करने के लिए पर्याप्त होगा:
- (ढ) 1 अप्रैल 1995 से आरंभ 30 सितम्बर 1995 तक की अवधि तक जांच की गई।

(ख) याचिकाकर्ताओं के विचार

3. याचिकाकर्ताओं ने अपनी याचिका और बाद में पेश कागजातों में निम्नलिखित बड़े मुद्दों को उठाया है :—

(क) सामान्य मूल्य पर :

- (i) यू एस ए और थाईलैंड में एक्रिलिक फाइबर का सामान्य मूल्य पर विचार, उनके घरेलू बाजार में प्रचलित मूल्य के आधार पर, याचिकाकर्ताओं द्वारा पेश किए गए सबूतों के आधार पर किया जा सकता है। यू एस ए के मामले में यह पेश किया गया कि एक्रिलिक फाइबर पर पी सी आई फाइबर्स और रॉ मैटेरियल्स नामक अग्रणी अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका द्वारा प्रकाशित आंकड़ों पर निर्भर रहा जा सकता है।
- (ii) थाईलैंड के मामले में भी सामान्य मूल्य घरेलू बाजार में प्रचलित मूल्य के आधार पर निर्धारित किया जा सकता है, जैसा कि थाईलैंड के स्थानीय बाजार में एक कंपनी द्वारा लगाई गई बोली की प्रति से प्रमाणित होता है।
- (iii) उपर्युक्त अधिनियम की धारा 9 क (1) ग (1) के अनुसार कोरिया आर पी के सामान्य मूल्य के मामले में याचिकाकर्ता ने प्रमाणिक सबूत मिलने में अक्षमता जताई। फिर भी उन्होंने यह दलील दी कि कोरिया आर पी द्वारा डम्पिंग इस तथ्य से साबित होता है कि एक्रिलोनाइट्रिल जो कि मुख्य कच्चा माल है की मूल्य वृद्धि के समतुल्य निर्यातकों ने मूल्य नहीं बढ़ाया है। याचिकाकर्ता ने दलील दी कि कोरिया आर पी के सामान्य मूल्य पर परिकलित मूल्य आधार पर विचार किया जाए। याचिकाकर्ता ने दावा किया कि उन्होंने तीनों देशों के सामान्य मूल्य के मामले में पर्याप्त प्रथम दृष्टया सबूत पेश किये हैं।

(ख) निर्यात मूल्य पर

- (i) इन देशों से एक्रिलिक फाइबर के निर्यात मूल्य के संबंध में डीजीसीआई एंड एस द्वारा जारी आंकड़ों के आधार पर विचार किया जा सकता है।
- (ii) डीजीसीआई एंड एस द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार सी आई एफ निर्यात मूल्य का समायोजन निम्नलिखित व्यय के लिए किया जाना चाहिए जो निर्यातकों द्वारा भारत में निर्यात करने के लिए अनन्य रूप से खर्च किया जाता है :—
—समुद्री भाड़ा तथा बीमा;
—निर्यातक देश में पोतलदान वाले पसन पर कस्टम क्लीयरेंस और पोर्ट हैंडलिंग;
—निर्यातक देश में स्थानीय माल परिवहन;
—निर्यातों के लिए विशेष पैकेजिंग।

(ग) क्षति पर

- (1) यूएसए, कोरिया और थाईलैंड से आयात समग्र रूप से बंद गया;
- (2) इन देशों से आयात भारत में एक्रिलिक फाइबर का मूल्य घटा रहे थे;
- (3) एक्रिलोनाइट्रिल के मूल्य में तेज वृद्धि के बावजूद भारतीय एक्रिलिक फाइबर उद्योग को फाइबर का विक्रय मूल्य बढ़ाने से रोका गया;
- (4) भारतीय उद्योग को अत्यधिक स्टॉक रखने के लिए बाध्य किया गया;
- (5) भारतीय उद्योग को एक्रिलिक फाइबर उत्पादन लागत से नीचे मूल्य पर बेचने के लिए बाध्य किया गया जिससे उसे हानि हुई।

ग. निर्यातकों, आयातकों तथा अन्य हितबद्ध पार्टियों के विचार

4. केवल एक उपभोक्ता उद्योग मंगठन, मै. इंडियन स्पिनर्स एसोसिएशन से प्राधिकारी उत्तर दिया। उनके विचार निम्न प्रकार हैं :—

- (i) पोलिएस्टर स्टेपल फाइबर और एक्रिलिक स्टेपल फाइबर की कीमतों, उनके कच्चे माल की कीमतों में गिरावट के कारण अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर घटी हैं और यह हमें कच्चे माल की कीमतों में हुए ह्रास के समनुपात में है।
- (ii) आयातों पर एंटी डम्पिंग शुल्क को लागू करना काटन और ब्लैन्डिंग यार्न के निर्यात को प्रभावित करेगा।

घ. जाँच और विश्लेषण

5. निर्यातकों, आयातकों, याचिकाकर्ताओं और अन्य हितबद्ध पार्टियों द्वारा पेश किये गये कागजातों की यह रिपोर्ट तैयार करते समय जाँच और विचार किया गया है और इस रिपोर्ट में उपयुक्त स्थलों पर उन पर विचार किया गया है।

ङ. विचाराधीन उत्पाद

वर्तमान जाँच के उद्देश्य से रिपोर्ट में विचार किया जाने वाला उत्पादन एक्रिलिक फाइबर है। एक्रिलिक फाइबर सिंथेटिक पोलिमेर का लंबा सूत्र है जिसमें एक्रिलोनाइट्रिल का कम से कम 85% वजन शामिल होता है, जो एक्रिलिक फाइबर के उत्पादन का प्रमुख कच्चा माल है। एक्रिलिक फाइबर का काफी हद तक निम्न रूप में वर्णन किया जाता है :

- 0 फाइबर की रंग धर्मिता (चमकीला/अर्ध-फीका/रंगीन)
- 0 फाइबर की लंबाई
- 0 फाइबर का डेनियर

7. एक्रिलिक फाइबर कुछ औद्योगिक उपयोगों के अतिरिक्त कई पहनावों, गृहमण्डा मदों में काम में लाया जाता है।

8. एक्रिलिक फाइबर कस्टम टैरिफ एक्ट, 1975 की अनुसूची 1 के कस्टम कोड 55033000 और इंडियन ट्रेड क्लासिफिकेशन (सुमेलित वस्तु वर्णन पर आधारित) के अन्तर्गत वर्गीकृत है फिर भी यह वर्णन केवल संकेतक है और वर्तमान जाँच के क्षेत्र में किसी प्रकार बाधक नहीं है।

च. समान वस्तुएं

9. एक्रिलिक फाइबर ऊपर वर्णित विभिन्न विशिष्टताओं में उत्पादित और बेचा जाता है। फिर भी ये विभिन्न विशिष्टताएं इस फाइबर के गुणों का मात्र मिश्रण करती हैं और इसके परिणामस्वरूप इसके विभिन्न उपयोग हो सकते हैं। लेकिन एक्रिलिक फाइबर की विभिन्न किस्मों के उत्पादन की प्रक्रिया, उपस्कर अथवा तकनीक में कोई महत्वपूर्ण भेद नहीं। यह भी देखा गया है कि विभिन्न किस्मों के विपणन की प्रणाली भी एक समान है। इसलिए यह समझा जाता है कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित एक्रिलिक फाइबर यूएसए, थाईलैंड और कोरिया आर पी से आयातित फाइबर के समान ही विशिष्टताएं रखता है और इसे उपयुक्त नियमों के अर्थ में समान वस्तु समझा जाये।

छ. घरेलू उद्योग

10. याचिका इंडियन एक्रिलिक्स लि. एस सी ओ से 49-50, सैक्टर 26, मध्य मार्ग, चण्डीगढ़ और मै. पशुपति एक्रिलोन लि; एम-14, कनाट सर्कस (मिडिल सर्कल) नई दिल्ली; मै. इंडियन पेट्रोकेमिकल्स लि.; मै. जे.के. सिंथेटिक्स लि. और मै. कान्सोलिडेटेड फाइबर्स एंड केमिकल्स लि. द्वारा दायर की गई है, जो एक्रिलिक फाइबर का उत्पादन करते हैं। जाँच की अवधि में भारत के कुल उत्पादन के 25 प्रतिशत से अधिक पर याचिकाकर्ताओं का नियंत्रण रहा। फोरम आफ एक्रिलिक फाइबर मैनुफैक्चरर्स द्वारा याचिका का समर्थन किया गया। चूंकि भारत के सभी एक्रिलिक फाइबर उत्पादन फोरम के सदस्य हैं, इसलिए याचिका भारत में एक्रिलिक फाइबर के सभी उत्पादकों द्वारा समर्थित समझी जाती है। इसलिए याचिकाकर्ताओं को आधार प्राप्त है और इसलिए याचिका को घरेलू उद्योग की ओर से किया गया माना जा सकता है।

11. मै. इंडियन एक्रिलिक्स लि; पशुपति एक्रिलोन लि. और कान्सोलिडेटेड फाइबर्स और केमिकल्स लि.; भारत में कुल घरेलू उत्पादन का प्रमुख अनुपात रखते हैं इसलिए ये उपरोक्त नियम 2 (ख) के अनुसार घरेलू उद्योग हैं।

ज. सामान्य मूल्य

12. मै. साईटेक इंडस्ट्रीज इंक (इसके उपरांत साईटेक उल्लेख किया जाएगा) और मै. थाई एक्रिलिक फाइबर्स कंपनी लि. (इसके उपरांत थाई एक्रिलिक उल्लेखित किया जाएगा) ने प्रश्नावली का उत्तर दिया है। दोनों निर्यातकों ने मौके पर जाँच की पेशकश की दोनों देशों की सरकारों को अग्रिम दी गई जिन्होंने ऐसी जाँच के लिए आपत्ति नहीं की। तदनुसार प्राधिकरण ने उपरोक्त नियम 10 के अनुरूप दोनों निर्यातकों के परिसरों की मौके पर जाँच की।

13. चूंकि कोरिया आर पी के निर्यातकों द्वारा कोई सूचना पेश नहीं की गई इसलिए प्राधिकारी ने सुप्राप्त सूचनाओं के आधार पर प्राथमिक जाँच परिणामों के साथ कार्यवाही शुरू कर दी है। सामान्य मूल्य निम्नलिखित रूप में निकाला गया है।

साईटेक का सामान्य मूल्य

14. साईटेक ने घरेलू बाजार में विक्रय मूल्य का पर्याप्त विवरण पेश किया है। इसलिए सामान्य मूल्य धारा 9 क (1) ग (1) के अनुसार निकाला गया है।

15. कम्पनी ने उपयुक्त को प्रमाणित करने के लिए साक्ष्य प्रस्तुत किए जिनकी प्राधिकारी ने जाँच - पड़ताल की और सत्यापित किया प्राधिकारी को अलग-अलग सौदों का विवरण उपलब्ध कराया गया जिसे साईटेक द्वारा प्रस्तुत किए गए दस्तावेजों साक्ष्यों के आधार पर सत्यापित किया गया था।

16. यह पाया गया कि भारत को निर्यात किए गए एक्रिलिक फाइबर की विशेष किस्म, अर्थात् 1.7 डेनियर रंगीन एक्रिलिक फाइबर की बिक्री साईटेक द्वारा अपने घरेलू बाजार में नहीं की गई। चूंकि उसी फाइबर को घरेलू बाजार में बेजा नहीं गया, इसलिए यह उचित माना गया कि समान किस्म के फाइबर अर्थात् 1.7 डेनियर एल डी सी के बिक्री मूल्य पर विचार किया जाए क्योंकि घरेलू बाजार में ठीक उसके समान फाइबर की बिक्री न होने की स्थिति में इसमें वही विशेषताएं हैं जो कि भारत को निर्यातित फाइबर में हैं। साईटेक द्वारा घरेलू बाजार में बेचे गए इस 1.7 डेनियर फाइबर को भारत को निर्यातित 1.7 डेनियर के समान वस्तु माना गया है।

17. साईटेक द्वारा दावा किए गए सामान्य मूल्य में समायोजन

कम्पनी ने निम्नलिखित के कारण समायोजन का दावा किया है :

- (क) अन्तिम आयोग आधार पर छूट की अनुमति
- (ख) परिवहन भत्ता;
- (ग) वाणिज्यिक खर्चें और कारपोरेट खर्चें (प्रशासनिक खर्चों का छोड़कर);
- (घ) छूट।

साईटेक के समायोजन के दावे पर चर्चा नीचे की गई है :

(क) विशिष्ट बाजार होने के कारण छूट

- (i) साईटेक ने दावा किया है कि चूंकि उन्होंने अपने ग्राहकों को उनकी अन्तिम प्रयोग आधारित बाजार नीति के अनुसार छूट प्रदान की है, उनके सामान्य मूल्य का आंकलन उनके शुद्ध वसूली के आधार पर अर्थात् छूट निकालकर करना चाहिए ।
- (ii) यह संभावित विकल्प है कि सभी मामलों में वास्तविक वसूली को उसका भारित औसत लिया जाए । सामान्यतः यह औसत वसूली या औसत मूल्य का अच्छा संकेत देता है । तथापि इस मामले में प्राधिकारी ने नोट किया है कि स्थिति भिन्न हो सकती है जब विशिष्ट बाजार पर निर्भर करते हुए बिल्कुल एक ही उत्पाद के विभिन्न सामान्य मूल्य हैं । तथापि, महत्वपूर्ण बात यह देखनी है कि क्या उसी प्रकार की बाजार विभिन्नता निर्यात बाजार पर भी लागू होती है । यदि निर्याता या निर्यातक की एक समान बाजार रणनीति है और वही शर्तें घरेलू और निर्यात बाजार पर लागू हैं तो विशिष्ट बाजार खण्डों के आधार पर मूल्य तुलना उचित हो सकती है । स्थिति बिल्कुल भिन्न होगी जब अन्तिम उपयोग आधार पर छूट और विशेष छूट केवल घरेलू बाजार को दी जाती है परन्तु भारतीय आयातकों को नहीं दी जाती ।
- (iii) वर्तमान मामले में साईटेक ने इसके अन्तिम उपयोग पर आधारित छूट के साथ ग्राहक को फाईवर बेचा है । तथापि, निर्यातक ने यह प्रमाणित करने के लिए प्राधिकारी के समक्ष कोई सबूत पेश नहीं किया कि जिस मूल्य पर भारतीय आयातकों के साथ लेन-देन हुआ उसमें क्या भारतीय आयातकों के अन्तिम उपयोग को भी ध्यान में रखा गया है । भारतीय आयातकों ने भी इस बात का कोई संकेत नहीं दिया कि उनको दिए गए मूल्य का उस अन्तिम उपयोग के साथ कोई संबंध है जिसमें उनके तैयार उत्पाद का इस्तेमाल किया जाना है । इसके अतिरिक्त इस विशेष मामलों में बिना किसी छूट के सामान अन्य घरेलू ग्राहक, ग्राहक सं.-2 को भी बेचा गया है । उपर्युक्त के मद्देनजर यह अधिक उचित रहेगा कि सामान्य मूल्य का आंकलन सभी ग्राहकों को दिए गए छूट रहित मूल्य की भारित औसत के आधार पर किया जाए । इसके अलावा प्राधिकारी ने देखा है कि ग्राहक-2 को समायोजन के रूप में छूट नहीं दिए जाने का कारण केवल यही नहीं है कि ग्राहक-1 को दिया गया छूट रहित मूल्य उपलब्ध है, अपितु इसका औचित्य यह है कि अन्तिम उपयोग आधारित छूट या बट्टा निर्यात पर भी उपलब्ध नहीं है जैसा कि रिकार्ड में दिए गए तथ्य इंगित करते हैं ।
- (iv) 1.7 डेनियर के मामले में सामान्य मूल्य घरेलू बाजार में उपलब्ध समान उत्पाद के मूल्य के आधार पर लगाया गया है ।

(ख) (i) वाणिज्यिक खर्च : इसमें शामिल है :

1. विज्ञापन
2. बिक्री खर्च
3. संदिग्ध खाते
4. तकनीकी सेवाएं
5. भण्डारण

उपर्युक्त खर्चों, बिक्री खर्चों को छोड़कर के कारण समायोजन की अनुमति दी गई है । अहां तक बिक्री खर्चों का संबंध है, साईटेक ने यह दर्शाने के लिए कोई सबूत पेश नहीं किया है कि ये खर्च अनन्य रूप से घरेलू बाजार में बिक्री पर खर्च किए गए हैं । यह उचित माना गया कि बिक्री खर्चों के दावे की अनुमति न दी जाए ।

(ii) कारपोरेट खर्च : इसमें शामिल है :

1. प्रशासनिक खर्च
2. अनुसंधान खर्च
3. कारपोरेट तकनीकी केन्द्र लागत
4. पेटेंट खर्च
5. परिशोधन

साईटेक ने दावा किया है कि ये खर्च उसने घरेलू बिक्री पर अनन्य रूप से किए थे । निर्यातक ने दावे के प्रमाण में कोई सबूत प्रस्तुत नहीं किया है और न ही कम्पनी के खाते यह दर्शाते हैं कि कम्पनी ने उपर्युक्त खर्च केवल घरेलू बिक्री पर ही किए हैं । अतः कम्पनी का दावा स्वीकार्य नहीं है ।

उपर्युक्त के अनुसार प्राधिकारी ने उचित माना है कि साईटेक को अन्य समायोजनों की अनुमति दी जाए ।

18. उपर्युक्त आधार पर जो कारखानागत बिक्री मूल्य निकाला गया है उसे संबंधित उत्पादों के लिए सामान्य मूल्य माना गया है ।

19. थाई एक्रिलिक का सामान्य मूल्य

प्राधिकारी ने थाईलैण्ड स्थित भारतीय दूतावास के जरिए थाई एक्रिलिक द्वारा दिए गए आंकड़ों का सत्यापन किया। निर्यातक के सामान्य मूल्य की गणना नीचे दी गई है :

- (i) थाई एक्रिलिक ने उनके घरेलू बाजार में प्रचलित मूल्य के आधार पर सामान्य मूल्य का दावा किया है। तथापि यह पाया गया कि कंपनी का दावा उसको मिले चार आर्डरों पर आधारित है। प्राधिकारी ने देखा कि निर्यातक से अनुरोध किया गया था कि उसके द्वारा घरेलू बाजार में की गई सभी बिक्रियों के विवरण भेजे जाएं। निर्यातक से यह भी अपेक्षा की गई थी कि इसके घरेलू बाजार में बिक्री से प्राप्त इकाई बिक्री वसूली तथा उसके द्वारा घरेलू बाजार में की गई बिक्री के लिए किए गए खर्च के संदर्भ में समायोजन का विवरण भेजा जाए। हालांकि निर्यातक ने औसत बिक्री वसूली का विवरण नहीं भेजा लेकिन प्राधिकारी ने कंपनी द्वारा दावाकृत बिक्री मूल्य अपनाया।
- (ii) निर्यातक ने बिक्री मूल्य में निम्नलिखित समायोजन के लिए दावा किया है :
 - (क) थाई एक्रिलिक द्वारा उत्पादन पंक्ति-2 से इसके उत्पादन में भिन्नता के कारण 7.1 प्रतिशत के समायोजन का जो दावा किया गया है उसके संबंध में कोई समुचित स्थापन प्रस्तुत नहीं किया जा सका। उत्पादन पंक्ति-2 से उत्पादन में भिन्नता के दावे को इन प्राथमिक जांच परिणामों के पर्योजन के लिए निरस्त कर दिया गया है।
 - (ख) निर्यातक ने चार प्राप्त हुए आर्डरों के आधार पर ब्याज, छूट और कमीशन और जोखिम को कवर करने के लिए गारंटी कमीशन के संबंध में समायोजन का दावा किया है। इस बात को स्वीकार किया जाता है कि घरेलू बाजार में की गई बिक्री पर निर्यातक ने इन मदों पर अलग-अलग खर्च किए होंगे। तथापि निर्यातक द्वारा दावे की राशि जांच की अवधि के दौरान निर्यातक द्वारा किए गए वास्तविक खर्चों के आधार पर नहीं है। यह उन खर्चों के आधार पर है जो निर्यातक द्वारा अनन्य रूप से उसको मिले चार आर्डरों पर खर्च किए होंगे। दावे की राशि वास्तविक रूप से किए गए खर्चों पर आधारित नहीं होने के कारण यह दावा स्वीकार्य नहीं है। फिर भी यह समझा गया कि निर्यातक ने इन मदों पर कुछ खर्चा किया है। अतः प्राधिकारी ने प्राथमिक निर्धारण के लिए निम्नलिखित के आधार पर इस खर्च के समायोजन की अनुमति दी है :
 - (1) ब्याज : निर्यातक ने दावा किया है कि उसने 20 दिन, 30 दिन, 60 दिन और 180 दिन के क्रेडिट पर घरेलू बाजार में बिक्री की थी। आंतरिक ब्याज लागत के कारण 30 दिन के क्रेडिट समायोजन की अनुमति दी गई है।
 - (ii) छूट और कमीशन : निर्यातक ने इसको प्राप्त चार आर्डरों पर 0% से 5% छूट और 0% से 2% तक कमीशन दिया है। प्राधिकारी ने इसके लिए क्रमशः 2.4% और 0.71% की दर से समायोजन की अनुमति दी है।
 - (ग) क्रेडिट जोखिम को कवर करने के लिए गारंटी कमीशन दिया जाता है।
 - (घ) निर्यातक ने भण्डारण लागत के लिए समायोजन का दावा किया है। दावा बिना सबूत के है, अतः यह स्वीकार्य नहीं है।

(ड.) निर्यात मूल्य

20. निर्यातक-घर निर्यात मूल्य निम्नानुसार परिकलित किया गया है :

1. साइटेक

साइटेक ने जांच अवधि के दौरान भारत को एक्रिलिक फाईबर के निर्यात का विवरण प्रस्तुत किया।

प्राधिकारी ने पाया कि कंपनी ने भारत को केवल निम्नलिखित सामान का निर्यात किया है :

- (क) 1.5 डेनियर चमकीलों एक्रिलिक फाईबर;
- (ख) 1.7 डेनियर रंगीन एक्रिलिक फाईबर;

कंपनी ने उपर्युक्त निर्यात मूल्य को प्रमाणित करने के लिए सयूक्त प्रस्तुत किए, जिनकी प्राधिकारी ने जांच व स्थापन किया।

कंपनी ने उत्पाद और बाजार खण्ड घर बिक्री मूल्यों का विवरण अलग-अलग रखा है। यह देखा गया कि विशिष्ट बाजार खण्ड और उत्पाद पर निर्भर बिक्री मूल्यों में बहुत ज्यादा फर्क है। अतः यह ज्यादा उचित समझा गया कि सामान्य मूल्य और निर्यात मूल्य की उत्पाद-घर तुलना की जाए।

साइटेक ने भिन्न-भिन्न मूल्यों पर दो पार्टियों को की गई बिक्री को देखते हुए कारखानागत निर्यात मूल्य की एक सूची दी है। तथापि प्राधिकारी ने वॉल्यूम और निर्यात मूल्य की गणना की।

II. थाई एक्रिलिक

21. निर्यातक ने जांच अवधि के दौरान भारत को किए गए सभी निर्यातों का विवरण प्रस्तुत किया है। निर्यातक ने निर्यात मूल्य में निम्नलिखित समायोजन का दावा किया है :

- (क) **निर्यात पर शुल्क वापसी** : यदि थाई एक्रिलिक सामान का निर्यात करता है तो वह कच्चे माल पर शुल्क के रूप में किए गए भुगतान के लिए शुल्क वापसी का हकदार है। जबकि इयूटी ड्रायैक के संबंध में निर्यातक का दावा सही है, लेकिन यह देखा गया है कि इयूटी ड्रायैक की दावाकृत रकम अनुचित है। जांच अवधि के दौरान इस को मिली इयूटी ड्रायैक की वास्तविक राशि के आधार पर इयूटी ड्रायैक का दावा नहीं किया गया है। अपितु उसने उक्त रकम निकाली है। अतः निर्यातक द्वारा दावाकृत इयूटी ड्रायैक की रकम प्रारंभिक जांच-परिणामों के लिए मान्य नहीं है।

प्राथमिक निधारण के उद्देश्य में जांच अवधि के दौरान कम्पनी द्वारा इयूटी की सबसे कम दर पर किए भुगतान के आधार पर ड्रायैक की राशि की पुनः गणना की गई है।

- (ख) **समुद्री भाड़ा और बीमा**: यह देखा गया है कि समुद्री भाड़े और बीमों के लिए निर्यातक का दावा भारत को किए गए कुछ निर्यात पर कम्पनी द्वारा किए गए खर्चों के साधारण औसत पर आधारित है। प्राधिकारी ने इस बात पर गौर किया कि निर्यातक को भारत में सभर निर्यातों पर वास्तविक कुल समुद्री भाड़े और बीमा के लिए किए गए भुगतान के आधार पर समायोजन के लिए दावा करना चाहिए था। निर्यातक द्वारा सौदेवार दिए गए निर्यातों के विवरण से पता चलता है कि बहुत से मामलों में निर्यात की मात्रा निर्यातक के दावे में दी गई मात्रा की तुलना में बहुत कम है। ऐसी खेपों में समुद्री भाड़ा इन बड़ी मात्राओं में समुद्री भाड़े के भुगतान से बहुत भिन्न होनी चाहिए। अतः प्राधिकारी ने इसके लिए प्राथमिक जांच परिणामों के प्रयोजन के लिए निर्यातक द्वारा भुगतान की उच्चतम दर पर समायोजन की अनुमति दी है। क्योंकि निर्यातक द्वारा प्रस्तुत की गई सूचना अपर्याप्त और गलत है। निर्यातक प्राथमिक जांच परिणाम के पश्चात् पर्याप्त और संतोषजनक सबूत के साथ समायोजन का दावा कर सकता है।

(ग) अन्य निर्यातक

22. (i) संयुक्त राज्य अमरीका से अन्य निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत सर्वोत्तम उपलब्ध सूचना के आधार पर निकाली गई है (इसमें मैसर्स जेम्स इन्ट्रेड सर्विसेज, मुंबई से याचिकाकर्ता द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना भी शामिल है)।
- (ii) थाईलैंड के शेष निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत थाई एक्रिलिक के लिए मानी गई कीमत के स्तर की ही अपनाई गई थी, चूंकि याचिकाकर्ता ने सूचित किया है कि थाईलैंड "थाई एक्रिलिक" में केवल एक ही उत्पादक है। क्योंकि कोरिया गणराज्य से किसी भी निर्यातक ने प्राधिकारी को सूचना प्रस्तुत नहीं की है, इसलिए निर्यात कीमत का आकलन डी जी सी आई एंड एम आंकड़ों के आधार पर किया गया है (शुरूआत के समय जिन आंकड़ों पर निर्भर रहा गया)।

23. निर्यात कीमत का समायोजन थाई एक्रिलिक तथा साइटेक के मामले में निर्यातकों द्वारा दावा किए गए अंतर तथा प्राधिकारी द्वारा जांच के आधार पर की गई है। संयुक्त राज्य अमरीका तथा कोरिया गणराज्य (सहयोगी निर्यातक) के अन्य निर्यातकों के मामले में इन समायोजनों की अनुमति इन निर्यातकों के असहयोग को ध्यान में रखते हुए याचिकाकर्ता द्वारा दावों के आधार पर दी गई थी।

1. तुलना

24. सामान्य मूल्य तथा निर्यात कीमत के बीच ठोस तुलना के प्रयोजन से प्राधिकारी ने निर्यातकों द्वारा प्रस्तुत की गई सूचना सहित सर्वोत्तम सूचना को ध्यान में रखा।

25. तुलना से संबंधित नियम निम्नानुसार हैं :

डंपिंग का माजिन निकालते समय, नामित प्राधिकारी निर्यात कीमत और सामान्य मूल्य के बीच बहुत अच्छी तुलना करेगा। यह तुलना व्यापार के उम्मी स्तर पर कारखाना द्वार स्तर पर की जाएगी सामान्यतया डंपिंग निश्चित करने वाली विक्री के संबंध में यथार्थतया उम्मी समय की जाएगी। जो अन्तर तुलनीयता पर प्रभाव डालते हैं, उनके लिए पत्येक मामले में गुण, शीप के आधार पर छूट दी जाएगी; अन्तर में शामिल हैं --बिक्री की शर्तें, कराधान, व्यापार के स्तर, मात्राएं, वास्तविक विशेषताएं तथा कोई अन्य अन्तर जो कीमत तुलनीयता को प्रभावित करने के लिए प्रदर्शित की जाती हैं।

जिन मामलों में निर्यात कीमत निर्मित कीमत होती है, यह तुलना व्यापार के समान स्तर पर सामान्य मूल्य को निर्धारित करने के बाद ही की जाएगी।"

26. प्राधिकारी ने पत्येक निर्यातक के लिए भारत औसत सामान्य मूल्य के साथ औसत निर्यात कीमत की तुलना की है। साइटेक के मामले में तुलना उनके द्वारा निर्यात किए गए फाइबर के ग्रेड टाइप के आधार पर की गई है।

27. तुलना से निम्नलिखित डंपिंग मार्जिन दिखाई देता है :

	डंपिंग मार्जिन (%)
साइटेक — 1.5 डेनियर	9.30
— 1.7 डेनियर	—
— अवशिष्ट	9.3
थाई एक्रेलिक	18.47
संयुक्त राज्य अमरीका से अन्य निर्यातक	64.29
थाइलैंड से अन्य निर्यातक	18.47
कोरिया गणराज्य से निर्यात	40.69

28. याचिकाकर्ता ने शिकायत की है कि साइटेक का भारत को 1.375 प्रति कि.ग्रा. अमरीकी डालर की दर से निर्यात किया गया है। तथापि यह पाया गया कि याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत किए गए साक्ष्य (साइटेक द्वारा जुटाए गए बीजक) जांच की अवधि के बाद की अवधि से संबंध रखता है। प्राधिकारी ने नोट किया कि जांच की अवधि के दौरान मान्य मूल्य तथा निर्यात कीमत डंपिंग का निर्धारण करने के लिए आवश्यक है और भारत को मौजूदा निर्यात कीमत या अंतर्राष्ट्रीय कीमतों इस प्रयोजन के लिए आवश्यक नहीं हैं।

क्षति

29. ऊपर नियम 11 के अंतर्गत अनुबंध-2, जब क्षति का निष्कर्ष निकाला जाता है तो ऐसे निष्कर्ष में घरेलू उद्योग का होने वाली क्षति का निर्धारण भी शामिल होगा। ऐसा करते समय सभी संगत तथ्यों को ध्यान में रखा जाएगा जिनमें शामिल हैं—डम्प किए गए आयातों की मात्रा, समान वस्तुओं के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर उनका प्रभाव तथा ऐसी वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर ऐसे आयातों पर परिणामी प्रभाव “.....” कीमतों पर डम्प किए गए आयातों के प्रभाव पर विचार करते हुए, इसकी यह जांच करना आवश्यक समझा गया है कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में डम्प किए गए आयातों द्वारा कीमतों में पर्याप्त कटौती की गई है या क्या ऐसे आयातों का प्रभाव पर्याप्त मात्रा में कीमतों का अन्यथा कम करना या कीमतों में होने वाली वृद्धि को रोकना है जो अन्यथा काफी बढ़ गई होती।

30. ऊपर नियम 11 के तहत अनुबंध 11(III) में यह भी व्यवस्था की गई है कि यदि एक से अधिक देशों से होने वाले उत्पाद के आयात की प्रतिपादन जांच होती है तो नामित प्राधिकारी निम्नलिखित निर्धारित करने के बाद ही ऐसे आयातों के प्रभाव का संचयी मूल्यांकन करेगा :

- (क) प्रत्येक देश से आयातों के संबंध में प्रमाणित डंपिंग का मार्जिन 2% से अधिक है जो निर्यात कीमत की प्रतिशतता के रूप में व्यक्त है तथा प्रत्येक देश से होने वाले आयात की मात्रा समान वस्तुओं के आयात का 3% है या जहां प्रत्येक देश का निर्यात 3% से कम है, संचयी आयात समान वस्तुओं के आयात का 7% से अधिक बैठता है; और
- (ख) आयात के प्रभाव का संचयी मूल्यांकन आयातित समान तथा उसके जैसे ही घरेलू सामान के बीच प्रतियोगिता की शर्तों का ध्यान में रखते हुए उपयुक्त है।

31. प्राधिकारी ने नोट किया है कि डंपिंग का मार्जिन तथा यू. एम. ए., थाइलैंड तथा कोरिया गणराज्य से होने वाले आयातों की मात्रा उपर्युक्त निर्धारित सीमाओं से अधिक है। आयात के प्रभाव का संचयी मूल्यांकन उपयुक्त है क्योंकि यू. एम. ए., थाइलैंड तथा कोरिया गणराज्य से आयात तथा याचिकाकर्ता तथा अन्य भारतीय उत्पादकों से आपूर्तियां भारतीय बाजार में सीधे ही प्रतियोगिता में हैं।

32. भारत में घरेलू उद्योग पर आयातों के प्रभावों की जांच करने के लिए, ऊपर नियम के अनुबंध 11 (IV) के अनुसार प्राधिकारी ने ऐसे सृष्टिकांकों पर विचार किया जो उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालते हैं, जैसे उत्पादन क्षमता उपयोग, बिक्री की मात्रा, स्टॉक, लाभप्रदता, कुल बिक्री आय, डंपिंग की मात्रा तथा मार्जिन आदि का संबंध है।

क. डम्प किए गए आयातों की मात्रा तथा बाजार का शेयर

33. जांच की अवधि के लिए डी जी सी आई एंड एस द्वारा संकलित ब्योंरों के अनुसार एक्रेलिक फाइबर के आयात उन निर्यातकों द्वारा प्रस्तुत किए गए निर्यातों के ब्योंरों की तुलना की गई जिन्होंने प्राधिकारी को उत्तर दिए। प्राधिकारी ने पाया कि डी जी सी आई एंड एस द्वारा सूचित आयातों की मात्रा थाई एक्रेलिक द्वारा सूचित निर्यातों की मात्रा से पर्याप्त रूप से कम है (थाई एक्रेलिक ने अवधि के दौरान 5496 मी. टन एक्रेलिक फाइबर के निर्यात की सूचना दी है जबकि डी जी सी आई एंड एस ने केवल 2338 मी. टन के आयात ही दर्शाए हैं)। चूंकि डी जी सी आई एंड एस द्वारा प्रकाशित आंकड़ों में भारत में फाइबर के आयातों की पूरी मात्रा शामिल नहीं की गई है। इसलिए इसे पूर्ण अर्थों में आयात में वृद्धि के रूप में क्षति का मूल्यांकन करने के लिए इन पर निर्भर नहीं रहा जा सकता। तथापि, प्राधिकारी ने नोट किया है कि आयातों की प्रवृत्ति के रूप में जहां तक क्षति का मूल्यांकन करने का संबंध है; इन पर अभी भी विश्वास किया जा सकता है।

थाइलैंड से हुए आयातों में 86 मी. टन (1994) से 5496 मी. टन (जाँच अवधि के छह महीने) तक वृद्धि हुई, जैसा कि थाई एक्रैलिक ने सूचित किया है, इससे यह सिद्ध होता है कि जाँच की अवधि के दौरान पूर्ण मात्रा में थाइलैंड से आयातों में पिछले वर्ष की तुलना में वृद्धि हुई है। जहाँ तक अन्य संबंधित देशों से आयातों का संबंध है, वास्तविक आयातों की मात्रा के आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं और इसका कोई अनुमान लगाया नहीं जा सकता।

उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार, जांच की अवधि में कुल मांग में तीन देशों के शेयर में 30% (1993-94) तक वृद्धि हुई है। यह बताने के लिए पर्याप्त साक्ष्य है कि जांच की अवधि के दौरान देश की कुल मांग में संबंधित देशों से आयातों के बाजार शेयर की प्रवृत्ति पिछले वर्ष की तुलना में वृद्धि पर है।

घरेलू उद्योग को प्रभावित करने वाले कारक :

34. उत्पादन तथा क्षमता उपयोग

घरेलू उद्योग के एक्रैलिक फाइबर के उत्पादन में जांच की अवधि के दौरान पूर्ववर्ती वर्ष (1994-95) की तुलना में 10 % तक की कमी आयाचिकाकर्ता ने सूचित किया कि मैसर्स जे. के. एक्रैलिक्स लि. ने उत्पादन बंद कर दिया है। तथापि यह पाया गया कि कंपनी ने जांच के बाद की अवधि में उत्पादन बंद कर दिया था।

35. सम्पूर्ण मात्रा में बिक्री

जांच की अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की बिक्री में पूर्ववर्ती वर्ष (1994-95) की तुलना में 18% तक की कमी आई है। याचिकाकर्ता ने उल्लेख किया है कि यह बिक्री और भी कम हुई होती यदि घरेलू उद्योग ने कीमतों को कम करके बिक्री में वृद्धि करने की कोशिश नहीं की होती।

36. बिक्री कीमत प्रवृत्ति

जांच की अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की औसत प्राप्ति में पूर्ववर्ती वर्ष (1994-95) की तुलना में 31% वृद्धि हुई तथापि, याचिकाकर्ता ने दावा किया कि बिक्री की कीमतों में वृद्धि प्रमुख कच्चे माल अर्थात् एक्रोलोनीट्राइल की कीमतों में अधिक वृद्धि होने के फलस्वरूप थी। याचिकाकर्ता ने फिर दावा किया कि बिक्री की कीमतों में वृद्धि वास्तव में जांच की अवधि के दौरान एक्रोलोनीट्राइल की कीमतों में वृद्धि के परिणामतः उत्पादन की लागत में वृद्धि से कम थी।

37. स्टॉक

घरेलू उद्योग का एक्रैलिक फाइबर का स्टॉक 1994-95 के अन्त में 1189 एम. टी. से बढ़कर जांच अवधि के दौरान 2159 एम. टी. हो गया। याचिकाकर्ता ने यह उल्लेख किया कि स्टॉक न केवल अवधि के अन्त में महत्वपूर्ण रूप से ज्यादा था बल्कि सम्पूर्ण जांच अवधि के दौरान भी यह ज्यादा था।

38. लाभ/हानि

याचिकाकर्ता ने दावा किया कि न केवल घरेलू उद्योग बल्कि एक्रैलिक फाइबर का उत्पादन करने वाले सम्पूर्ण भारतीय उद्योगों के उत्पादन लागत कम मूल्यों पर एक्रैलिक फाइबर की बिक्री से वित्तीय हानि हुई। घरेलू उद्योग की हानि में पूर्ववर्ती वर्ष (1994-95) की तुलना में जांच अवधि के दौरान करीब 30 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

39. क्षति का निष्कर्ष :

प्राधिकारी का अभिमत है कि :

क. परिस्थितियों की मांग है कि दोनों देशों से आयातों के लिए संवन्धी आधार पर हुई क्षति पर विचार किया जाए;

ख. एक्रैलिक फाइबर के थाइलैंड से आयात में पिछले वर्ष (1994-95) की तुलना में सकल वृद्धि हुई;

ग. जांच अवधि के दौरान यू. एस. ए., थाइलैंड और कोरिया गणराज्य से आयातों का रूख देश की कुल मांग की तुलना में वृद्धि का था;

घ. यू. एस. ए., थाइलैंड और कोरिया गणराज्य से निर्यातों के कारण घरेलू उद्योग अपनी कीमतों को अलाभकर स्तरों पर रखने के लिए बाध्य हुआ। इन निर्यातों ने घरेलू उद्योग को अपनी कीमतों को उत्पादन लागत में वृद्धि के अनुपात में बढ़ाने से रोका।

च. घरेलू उद्योग से संबंधित विभिन्न सूचक जैसे, उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री की मात्रा, औसत बिक्री अधिप्राप्ति, स्टॉक, हानियां सम्मिलित रूप से और संवन्धी रूप से इस तथ्य को प्रमाणित करते हैं कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है।

40. इस प्रकार प्राधिकारी का यह अभिमत है कि—

घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है।

ट. भारतीय उद्योग का हित और अन्य मुद्दे

41. सामान्य रूप से प्रति-पाटन शुल्कों का उद्देश्य वैसे पाटन को समाप्त करना है जो घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचा रहा है तथा भारतीय बाजार में खुल और बिना भेदभाव की प्रतिस्पर्द्धा की स्थिति को पुनः बहाल करना है जोकि देश के सामान्य हित में है।

42. यह माना जाता है कि प्रति-पाटन शुल्क लगाने से विनिर्मित उत्पादों की कीमत के स्तर प्रभावित होंगे और तदुपरान्त इन उत्पादों की तुलनात्मक प्रतिस्पर्द्धात्मकता पर कुछ प्रभाव डाल सकती हैं। किन्तु, प्रति-पाटन उपायों से भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्द्धा कम नहीं होगी, विशेषकर तब अग प्रतिपाटन शुल्क लगाने को उस राशि तक रखा जाए जो घरेलू उद्योग की क्षति की पूर्ति करने के लिए आवश्यक हो। इसके विपरीत, प्रति-पाटन उपायों का लागू करने से पाटन की प्रथाओं द्वारा प्राप्त अनुचित लाभ समाप्त हो जाएंगे, यह घरेलू उद्योग की अवधि को रोकेगा और एक्रैलिक फाइबर के उपभोक्ताओं और ज्यादा विस्तृत पसंद की उपलब्धता बनाए रखने में सहायता करेगा। प्राधिकारी ने नोट किया है कि प्रतिपाटन उपायों का लगाए जाने से किसी भी तर से यू. एस. ए., थाइलैंड और कोरिया से होने वाले आयातों पर प्रतिबंध नहीं लगेगा, इसलिए उपभोक्ताओं के लिए उत्पाद की उपलब्धता प्रभावित नहीं होगी। उपभोक्तागण तब भी आपूर्ति के अनेक स्रोतों को बनाए रख सकते हैं।

43. घरेलू उद्योग की क्षति को समाप्त करने के लिए आवश्यक प्रतिपाटन शुल्क की मात्रा निर्धारित करने के लिए प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की क्षमता उपयोग के अधिकतम स्तर पर उत्पादन की अधिकतम लागत पर विचार करते हुए घरेलू उद्योग के लिए भारत में एक्रिलिक फाइबर के उचित बिक्री मूल्य सहारा लिया है।

44. पाटन के अतिरिक्त यदि अन्य किन्हीं कारणों से घरेलू उद्योग को अगर कोई क्षति हुई है तो पाटित आयातों द्वारा घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करने के लिए आवश्यक प्रति-पाटन शुल्क की राशि की अनुशंसा करते हुए उस पर विचार नहीं किया गया है।

45. सीमाशुल्कों में कमी किसी भी तरह से पाटन को प्रभावित नहीं करती है। जहाँ तक क्षति का संबंध है, प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग द्वारा झेली जा रही ते के स्तर की गणना जांच अवधि के दौरान सीमा शुल्क पर विचार करने के बाद की है।

46, 47. **उतराई मूल्य :** चूंकि साइटेक और थाई एक्रिलिक ने सी. आई. एफ. निर्यात मूल्य प्रस्तुत किया, इसलिए प्राधिकारी ने उसी के आधार पर रित औसत उतराई मूल्य पर विचार किया है और ऐसा करते समय चालू स्तरों पर सीमा शुल्क और 1% की दर से उतराई शुल्क तथा 2% की दर पर रखरखाव शुल्क लगाया गया है। यू. एस. ए. और कोरिया से अन्य निर्यातों के मामले में, निर्यातकों ने कोई सूचना प्रस्तुत नहीं की है। इस प्रकार, प्राधिकारी सीमा शुल्कों के प्रचलित स्तरों पर शुल्क लेकर और 1 % की दर से उतारने का शुल्क और 2% की दर से रखरखाव शुल्क लेकर सी. आई. एफ. कीमतों आधार पर उतराई पश्चात् की कीमत निकाली।

48. **व. निष्कर्ष :** पूर्वोक्त पर विचार करने के बाद, प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि:

क. यू.एस.ए., थाईलैंड और कोरिया आर.पी. (साइटेक द्वारा निर्यातित 1.7 डेनियर एक्रिलिक फाइबर को छोड़कर) मूल के या वहाँ से निर्यातित एक्रिलिक फाइबर का भारत को निर्यात इसकी सामान्य कीमत से कम कीमत पर किया गया है, जिसके परिणामस्वरूप इन निर्यातकों द्वारा पाटन किया गया

ख. भारतीय उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है;

ग. यू.एस.ए., थाईलैंड और कोरिया के आयातों द्वारा संचयी रूप से क्षति हुई है।

49. घरेलू उद्योग की वास्तविक क्षति को समाप्त करने के लिए, जांच-परिणाम के लम्बित रहने तक, साइटेक द्वारा निर्यात किए गए 1.7 डेनियर को गड़कर, यू. एस. ए., थाईलैंड और कोरिया आर. पी. मूल के या वहाँ से निर्यात किए गए एक्रिलिक फाइबर के सभी आयात पर, अन्तिम जांच-परिणाम आने तक, अनन्तिम रूप से प्रतिपाटन शुल्क लगाना आवश्यक समझा जाता है।

50. इस पर विचार किया गया कि डम्पिंग मार्जिन से कम शुल्क लगाना हानियों को समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा या नहीं। इस उद्देश्य से प्रत्येक निर्यातक के लिए आयातों की उतारने के बाद की भारत औसत कीमत की तुलना घरेलू उद्योग की उस उचित बिक्री कीमत से की गई जिसका निर्धारण जांच-अवधि के लिए किया गया है। जहाँ यह अन्तर डम्पिंग मार्जिन से कम था, वहाँ डम्पिंग मार्जिन से कम शुल्क की अनुशंसा की गई। तदनुसार, यह प्रस्ताव किया जाता है कि अन्तिम निर्धारण के लम्बित रहने तक यू. एस. ए., थाईलैंड और कोरिया आर. पी. मूल के या वहाँ से निर्यात किए गए, सीमा शुल्क टैरिफ अध्याय 55 के अन्तर्गत आने वाले एक्रिलिक फाइबर से सभी आयातों पर केन्द्र सरकार द्वारा इस संबंध में जारी की गई अधिसूचना की तिथि से वे अनन्तिम शुल्क लगाए जाएं जोकि नीचे निर्दिष्ट किए गए हैं :

निम्नलिखित मूल के या वहाँ से निर्यातित उत्पाद	निर्यातक का नाम	शुल्क की राशि (रु० प्रति कि०ग्रा०)
1. यू. एस. ए.	साइटेक इन्डस्ट्रीज इंक यू. एस. ए.	
	— 1.7 डेनियर कलर एक्रिलिक फाइबर के निर्यात के मामले में	शून्य
	— उपर्युक्त से भिन्न विनिर्देशन के सभी एक्रिलिक फाइबर	6.30
	उपर्युक्त से भिन्न निर्यातक	42.93
2. थाईलैंड	थाई एक्रिलिक फाइबर क० लिमि०	10.40
	उपर्युक्त से भिन्न निर्यातक	10.40
3. कोरिया गणराज्य	कोई निर्यातक	20.67

51. ज्ञात निर्यातकों, आयातकों, याचिकाकर्ताओं तथा अन्य हितबद्ध पार्टियों को प्राधिकारी द्वारा अलग से लिखा जा रहा है, जो इस अधिसूचना की जारी होने की तारीख से 40 दिनों के भीतर अपने विचारों से अवगत करा सकते हैं। आवेदन कर सकते हैं। कोई अन्य हितबद्ध पार्टी भी इन निष्कर्षों के प्रकाशित होने की तारीख से 40 दिनों के भीतर अपने विचारों से अवगत करा सकती है।

दीपक चटर्जी, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE

NOTIFICATION

New Delhi, the 31st March, 1997

Subject: Anti dumping investigation concerning imports of acrylic fibres from USA, Thailand and Korea RP - Preliminary Findings

47/ADD/IW/- Having regard to the Customs Tariff Act 1975 as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, thereof:

A. PROCEDURE

2. The procedure described below has been followed with regard to the investigation:

- a) The Designated Authority (hereinafter referred to as Authority), under the above Rules, received a written application from M/s. Indian Acrylics Ltd and Pasupati Acrylon Ltd. on behalf of the domestic industry, alleging dumping of Acrylic Fibres originating in or exported from the USA, Thailand and Korea RP;
- b) The preliminary scrutiny of the application revealed certain deficiencies, which were pointed out to the petitioners.
- c) The Authority, on the basis of sufficient evidence submitted by the petitioners, decided to initiate investigations against USA, Thailand and Korea RP. The Authority notified the Embassy of these countries about the receipt of dumping allegation before proceeding to initiate the investigation in accordance with sub-Rule 5(5) of the Rules.
- d) The Authority issued a public notice dated 13th Sept., 1996 published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating anti-dumping investigation concerning imports of Acrylic Fibre, classified under custom heading 550330 of Schedule I of the Customs Tariff Act, 1975 originating in or exported from the USA, Thailand and Korea RP;
- e) The Authority forwarded copy of the public notice to the known exporters (whose details were made available by the petitioners) and industry associations and gave them an opportunity to make their views known in writing in accordance with the rule 6(2);

- f) The Authority forwarded copies of the public notice to the known importers of acrylic fibres in India and advised them to make their views known in writing within forty days from the date of the letter;
- g) Request was also made to the Central Board of Excise & Customs (CBEC) to arrange copies of all the relevant Bills of Entries for the period of investigation. No information was, however, received from CBEC;
- h) The Authority provided copies of the petition to all the known exporters also and the Embassies of USA, Thailand and Korea in accordance with rule 6(3) supra.
- i) The Authority sent questionnaires, to the following known exporters to elicit relevant information:
 - i) Cytec Industries Inc., USA;
 - ii) Monsanto Fibres, USA;
 - iii) Hanil Synthetic Fibre Company Ltd., Korea RP;
 - iv) Taekwang Industrial Company Ltd., Korea RP;
 - v) Thai Acrylic Fibre Company Ltd., Thailand;

M/s. Cytec Industries Inc., Monsanto Inc., (through Monsanto Chemicals of India Ltd.) and Thai Acrylic Fibre requested for extension of time, which was allowed by two weeks. Response to the questionnaires was filed by the following:

- i) Cytec Industries Inc., USA;
- ii) Thai Acrylic Fibre Company Ltd., Thailand;
- j) The Embassies of USA, Thailand and Korea in New Delhi were informed about the initiation of investigation, in accordance with rule 6(2) with a request to advise the exporters/producers from their respective countries to respond to the questionnaire within the prescribed time. Copies of the petition and questionnaire sent to the exporters were also sent to the Embassies.
- k) The questionnaire was sent to the following importers of Acrylic Fibre in India calling for necessary information in accordance with rule 6(4):
 - i) Vardhman Spinning & General Mills, Ludhiana;
 - ii) Nahar Spinning Mills Ltd., Ludhiana;
 - iii) Malwa Cotton Spinning Mills Ltd., Ludhiana;
 - iv) Rajasthan Spinning & Weaving Mills Ltd., New Delhi;
 - v) Winsome Textile Industries Ltd., Chandigarh;
 - vi) Siddhartha Super Spinning Mills Ltd., New Delhi;
 - vii) Bhiwani Textile Mills, Bhiwani;
 - viii) Adhinath Textiles Ltd., Ludhiana;
 - ix) Shruti Textiles Mills, Udaipur;
 - x) Vardhman Spinning & General Mills, Ludhiana;
- l) Information regarding the Domestic Industry was sought from M/s. Indian Acrylics Ltd. and Pasupati Acrylon Ltd.. M/s. Consolidated Fibres and Chemicals Ltd. (hereinafter referred to as Indian Acrylics, Pasupati

and Consolidated Fibres respectively) voluntarily furnished information required by the Authority.

- m) The Authority deputed a team of officials to conduct on-the-spot investigation at the premises of Pasupati;
- n) Cost investigation was also conducted to work out optimum cost of production and cost to make and sell acrylic fibre in India on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) and the information furnished by the petitioner to ascertain if anti-dumping duties lower than the dumping margins would be sufficient to remove injury to the domestic injury;
- o) Investigation was carried out for the period starting from 1st April, 1995 to 30th Sept., 1995;

B. PETITIONERS' VIEWS

3. The petitioners have raised the following major issues in their petition and subsequent submissions:

a. On normal value:

(i) Normal value of acrylic fibre in the USA and Thailand can be considered on the basis of prices prevailing in their home markets on the basis of evidence furnished by the petitioners. It was submitted that in case of USA, reliance can be placed on the statistics published by a leading international journal namely, PCI -Fibres & Raw Materials on acrylic fibre.

(ii) Normal value in case of Thailand can also be established on the basis of the prices prevailing in the home market, as evidenced by a copy of quotation raised by a company in the local market in Thailand.

(iii) The petitioners claimed their inability to get authentic evidence of Normal value in case of Korea RP in accordance with Section 9A(1)c(i) of the Act supra. They, however, pleaded that dumping by Korea RP is established by the fact that the exporters have not increased their prices commensurate with increase in the prices of major raw material, Acrylonitrile. The petitioner pleaded consideration of normal value in case of Korea RP on the basis of constructed value. The petitioners claimed that they have furnished sufficient prime facie evidence of normal value in case of all the three countries.

b. On export price:

i) The export price of acrylic fibre from these countries can be considered as per the statistics released by DGCI&S.

ii) The CIF export price as per the statistics released by DGCI&S should be adjusted for the following for the following expenses incurred exclusively by the exporters on exports to India:

-Ocean Freight and Insurance;

- Customs Clearance and Port Handling at the port of shipment in the exporting country;
- Local transportation in the country of export;
- Special packaging for exports;

c. On injury:

- i) Imports from USA, Korea RP and Thailand increased in absolute terms;
- ii) Imports from these countries were undercutting the prices of acrylic fibre in India;
- iii) The Indian acrylic fibre industry has been prevented from increasing the selling prices of the fibre in spite of sharp increase in the prices of Acrylonitrile;
- iv) Indian industry was forced to keep very high level of stock;
- v) The Indian industry has been forced to sell acrylic fibre below cost of production, resulting in losses;

C. VIEWS OF EXPORTERS, IMPORTERS AND OTHER INTERESTED PARTIES

4. The views expressed by the exporters, importers and the user industry association, Indian Spinners Association, are as under:

a.) Thai Acrylic:

- i) The petitioners have furnished wrong estimates of normal value and the same are higher than the prevailing normal value in Thailand;
- ii) Abnormal increase in the prices of acrylonitrile was a major reason for the difference between the normal value and the export price during the investigation period;
- iii) The investigation period chosen by the Authority is inappropriate. The prices of acrylonitrile during the period were abnormally higher. The Authority should have considered one year period for the investigation;

On injury:

- iv) The petitioner have not given sufficient information on injury in the petition;
- v) The domestic industry suffered losses during 1994-95 when there was no import from Thailand;
- vi) Sales realisation of the domestic industry have shown considerable improvement in 1995-96 which includes the investigation period;
- vii) The petitioner has achieved a capacity utilisation of over 100%;

On causal link:

- viii) There is no evidence of causal link in the petition;

ix) Manufacturers of acrylic fibres can not be in a position to pass on the increase in the prices of acrylonitrile, and the same have to be absorbed by the producers of acrylic fibres;

x) The landed value of imports from USA and Korea RP was much lower than landed value of imports from Thailand, which is the reasons for lower selling prices of the domestic industry.

b) Indian Spinners Association:

i) Prices of Polyester Staple Fibre and Acrylic Staple Fibre have declined internationally on account of drop in prices of their raw materials and the decline is proportionate to the decline in the prices of raw materials;

ii) Imposition of Anti Dumping Duties on imports would affect exports of cotton and blended yarns.

D. EXAMINATION AND ANALYSIS

5. The submissions made by the exporters, importers, petitioners and other interested parties have been examined and considered and have been dealt at appropriate places in these findings.

E. PRODUCT UNDER CONSIDERATION

6. The product considered in the report for the purpose of the present investigation is acrylic fibre. Acrylic fibre is a long chain of synthetic polymer composed of at least 85% by weight of Acrylonitrile, which is the major raw material for production of acrylic fibre. Acrylic fibre is broadly described in terms of the followings:

- colourness of the fibre (bright/semi-dull/coloured)
- length of the fibre
- denier of the fibre

7. Acrylic fibre has application in a number of apparels, household items in addition to some industrial uses.

8. Acrylic Fibre is classified under custom code 550330 of Schedule I of the Customs Tariff Act, 1975 and No. 55033000 under Indian Trade Classification (based on harmonised commodity description). The description is, however, indicative only and is in no way binding on the scope of the present investigation.

F. LIKE ARTICLES

9. Acrylic fibre is produced and sold in various specifications, as detailed above. The various specifications, however, merely depict the properties of the fibre and may result in varying end-uses. However, there are no significant differences in terms of process, equipment or technology to produce different varieties of acrylic fibre. It is also observed that the marketing pattern of different varieties is also similar. It is therefore,

considered that acrylic fibres produced and sold by the domestic industry has characteristics closely resembling the acrylic fibres imported from USA, Thailand and Korea RP, and may be treated as like articles within the meaning of the rules supra.

G. DOMESTIC INDUSTRY

10. The petition has been filed by M/s Indian Acrylics Ltd., S.C.O. No. 49-50, Sector 26, Madhya Marg, Chandigarh and M/s. Pasupati Acrylon Ltd., M-14, Cannaught Circus (Middle Circle), New Delhi. M/s. Indian Petrochemicals Ltd., M/s. J K Synthetics Ltd., and M/s. Consolidated Fibres & Chemicals Ltd. also produce acrylic fibre. The petitioners controlled more than twenty five percent of the total Indian production during the period of investigation. The petition is supported by the Forum of Acrylic Fibre Manufacturers. Since all producers of acrylic fibre in India are members of the Forum, the petition is considered as having been supported by all the acrylic fibre producers in India. The petitioners, therefore, have the standing, and the petition can therefore, be considered as having being made on behalf of the domestic industry.

11. M/s. Indian Acrylics Ltd., Pasupati Acrylon Ltd. and Consolidated Fibres & Chemicals Ltd. account for major proportion of the total domestic production in India and, therefore, constitute domestic industry in accordance with Rule 2(b) supra.

H. NORMAL VALUE

12. M/s. Cytec Industries Inc. (hereinafter referred to as Cytec) and M/s. Thai Acrylic Fibres Company. Ltd. (hereinafter referred to as Thai Acrylic) responded to the questionnaire. Both the exporters offered themselves for spot investigation. The Governments of both the countries were notified in advance who did not object to such investigation. The Authority accordingly conducted on-the-spot investigations at the premises of both the exporters in accordance with Rule 10 supra.

13. Since no information has been filed by the exporters from Korea RP the Authority has proceeded with Preliminary Findings on the basis of the best available information. The normal values have been worked out as under:

Normal value of Cytec:

14. Cytec has furnished sufficient details of selling prices in its domestic market., Normal value has, therefore, been arrived at in accordance with Section 9A(1)(i).

15. The company adduced evidence to establish the above, which were scrutinised and verified by the Authority, through a team of officers. Transaction-wise details were also provided to the Authority which were verified on the basis of documentary evidence produced by Cytec.

16. It was found that the specific variety of acrylic fibre exported to India, i.e., 1.7 Denier coloured acrylic fibre has not been sold by Cytec in its

home market. Since there were no sales of the exact fibre in the home market, it was considered appropriate to consider selling prices of similar fibre i.e., 1.7 Denier LDC as it has characteristics closely resembling to the fibre exported to India, in the absence of sales of exactly similar fibre in the home market. This 1.7 Denier fibre sold by Cytec in the domestic market has been considered as like article to the 1.7 Denier exported to India.

17. Adjustments in normal value claimed by Cytec:

The company has claimed adjustments on account of the following:

- a. rebates allowed on end-use basis;
- b. transportation allowance;
- c. commercial expenses and corporate expenses (except for administrative expenses) -
- d. discounts

The adjustments claimed by Cytec have been discussed below:

a. Rebate allowed on end-use basis:

- (i) It has been claimed by Cytec that since they have allowed rebates to their customers in accordance with their end-use based marketing policy, their normal values should be calculated on the basis of their net realisations i.e., after deducting the element of rebate.
- (ii) One of the possible alternatives is to take the actual realisation in all the cases and take a weighted average of the same. Normally, this should give a good indication of the average realisation or the average price. However, in this case the Authority observes that different normal values exist for the very same product depending upon the specific market it is catering to. The important point to be seen is whether the same kind of market differentiation is applicable in the export market also. If the producer or the exporter has the same marketing strategy and the same terms and conditions for the domestic as well as the export market, price comparisons on the basis of specific market segments may be appropriate. The position is different when rebates or special discounts are allowed on the basis of end-use only to the domestic markets and not to the Indian importers. In the present case, Cytec has sold fibre to Customer 1 with rebate based on its end-use. However, no evidence was produced by the exporter before the Authority to establish that the price at which goods were transacted with the Indian importers also took into consideration the end-use the Indian importers are catering to. Even the Indian importers have not indicated that the prices offered to them have any relation to the end-use their finished products would be put to. Moreover, in this particular case the articles have also been sold to another domestic customer, namely Customer 2 without any element of rebate. In view of the above, it would be more appropriate if the normal value is worked out as a weighted average of non-rebated price to all the customers. The Authority further observes that the rebate to Customer 1 is not admissible as an adjustment not due to the fact that non-rebated price to Customer 2 is available but on the rationale that the end-use

based discount or rebate is not available on exports also, as indicated by the facts on record.

- (iv) Normal value in case of 1.7 Denier has been arrived at on the basis of the price of like article in the home market.

b (i) Commercial Expenses: These include

1. advertisement
2. selling expenses
3. doubtful accounts
4. technical services
5. warehousing
6. customer service;

Adjustments on account of the above expenses, except for selling expenses have been allowed. As regard selling expenses, Cytec has not furnished any evidence to show that the same were incurred exclusively on sales in the domestic market. It is considered appropriate to disallow the claim of selling expenses.

(ii) Corporate Expenses: These include

1. administrative expenses
2. research expenses
3. corporate technical centre costs
4. patent expenses
5. amortisation.

Cytec has claimed that these expenses were incurred exclusively on domestic sales. Neither the exporter has adduced any evidence in support of the claim, nor the company's accounts reflect that the above expenses were incurred by the company only on domestic sales. The claim of the company, therefore, is not accepted.

Subject to above, the Authority considered it appropriate to allow other adjustments claimed by Cytec.

18. The ex-works selling prices as worked out on the above basis has been considered as Normal Value for the products in question.

19. Normal value of Thai Acrylic:

The Authority through the Indian Embassy in Thailand carried out verification of the data furnished by Thai Acrylic. The normal value of the exporter has been worked out as detailed below.

- i) Thai Acrylic has claimed normal value on the basis of prices prevailing in their domestic market. However, it is found that the claim of the company is based on four orders received by it. The Authority notes that the exporter was requested to furnish details of all the sales made in its home market. Further, the exporter was required to furnish details of unit sales realisation from sales in its home market and claim adjustment on account of expenses incurred by it exclusively on sales in its home market. Though the exporter

has not furnished details of average sales realisation, the Authority has adopted the selling price claimed by the company.

- ii) The exporter claimed the following adjustments in the selling prices:
 - a) No proper verification could be offered by Thai Acrylic in respect of adjustment of 7.1% claimed on account of difference in its production from production line-2. The claim on account of difference in production from production line-2 is rejected, for the purpose of these preliminary findings.
 - b) Adjustments in respect of interest, discounts & commissions, guarantee commission to cover risks have been claimed by the exporter on the basis of the four orders received. It is appreciated that the exporter might have incurred different expenditure on sales made in its home market on these accounts. However, the amounts claimed by the exporter are not on the basis of actual expenses incurred by the exporter during the investigation period. These are on the basis of expenses which the exporter might have to exclusively incur on the four orders received by it. The amounts claimed, not being on the basis of actual expenses incurred, are inadmissible as claimed. Nevertheless, it is appreciated that the exporter might have incurred some expenditure on these accounts. The Authority has therefore, allowed adjustments on these accounts on the following basis, for the purpose of preliminary determination.:
 - i) Interest: The exporter has claimed that it had sold in home market at credits of 0 day, 30 days, 60 days and 180 days. Adjustment on account of extra interest cost is allowed for credit of 30 days.
 - ii) Discounts & Commissions: The exporter has given discounts ranging between 0 % to 5 % and commission ranging between 0 % to 2 % on the four orders received by it. The Authority has allowed adjustment on these accounts @ 2.4 % and 0.71 % respectively.
 - iii) The guarantee commission to cover the credit risk is allowed.
 - c) The exporter has claimed adjustments on account of storage cost. The claim is without any evidence, and therefore, is not accepted.

H. EXPORT PRICE

20. The export price has been worked out exporter wise, as follows:

I) Cyttec:

Cyttec furnished details of exports of acrylic fibres to India during the period of investigation. The Authority found that the company has exported only the following material to India:

- a. 1.5 Denier bright acrylic fibre;
- b. 1.7 Denier colour acrylic fibre;

The company adduced evidence to establish the above Export Price, which were scrutinised and verified by the Authority.

The company has maintained separate details of product and market segment wise selling prices. It was found that the selling prices greatly vary depending upon the specific market segment and the product. It was, therefore, considered more appropriate to do product-wise comparison of Normal Value and Export Price.

Cytec has given a range of ex-works export price in view of sales made at different prices to the two parties. The Authority has however, worked out weighted average export prices.

II) Thai Acrylic

21. The exporter has furnished details of all the exports made to India during investigation period. The exporter has claimed the following adjustments in the export price:

(a) Duty drawback on exports: Thai Acrylic is entitled to drawback of duty paid by it on raw materials in case it exports the goods. Whereas the claim of the exporter with regard to duty drawback is in order, it is noted the amount of duty drawback claimed is inappropriate. The exporter has not claimed the amount of duty drawback on the basis of actual amount of drawback received by it during the investigation period. It has instead derived the same. The amount of duty drawback claimed by the exporter is, therefore, not allowed for the purpose of preliminary findings. The amount of drawback has been reworked out on the basis of lowest rate of duty paid by the company in the investigation period, for the purpose of preliminary determination.

(b) Ocean freight and insurance: It is seen that the claims of the exporter on account of ocean freight and insurance are based on simple average of expenditure incurred by the company on some exports made to India. The Authority notes that the exporter should have claimed the adjustment on the basis of actual total ocean freight and insurance paid by it on all exports to India. It is seen from the details of transaction wise exports furnished by the exporter that in a number of cases the volumes of exports are significantly lower compared to the volumes considered by the exporter in its claim. Ocean freight in such shipments could be significantly different than the freights paid on these larger volumes. The Authority has therefore, allowed adjustment on these accounts on the basis of the highest rates paid by the exporter, for the purpose of this preliminary findings, in view of insufficient and inaccurate information furnished by the exporter. The exporter may claim adjustment with sufficient and satisfactory evidence after preliminary findings.

III) Other Exporters :

22. (i) The export price for other exporters from USA has been worked out on the basis of best available information (including those made available by petitioner from M/s. James Intrade Services, Mumbai).

(ii) For the residual exporters from Thailand, the same level of export price has been adopted as has been considered for Thai Acrylic

since the petitioner has reported that there is only one producer in Thailand (Thai Acrylic). Since none of the exporters from Korea RP has submitted any information to the Authority, the export price has been worked out on the basis of DGCI&S data (the data relied upon at the time of initiation)

23. The export price has been adjusted for the differences claimed by the exporters and verified by the Authority in case of Thai Acrylic and Cytec, as detailed above. In case of other exporters from USA and Korea RP (non-co-operative exporters), adjustments have been allowed on the basis of claims made by the petitioner in view of non-co-operation from these exporters.

I. COMPARISON

24. For the purpose of fair comparison between the normal value and the export price, the Authority took into account the best information available including the information furnished by the exporters.

25. The rules relating to comparison provide as follows:

"While arriving at margin of dumping, the designated authority shall make a fair comparison between the export price and the normal value. The comparison shall be made at the same level of trade, normally at ex-works level, and in respect of sales made at as nearly possible the same time. Due allowance shall be made in each case, on its merits, for differences which affect price comparability, including differences in conditions and terms of sale, taxation, levels of trade, quantities, physical characteristics, and any other differences which are demonstrated to affect price comparability.

In the cases where export price is a constructed price, the comparison shall be made only after establishing the normal value at equivalent level of trade."

26. The Authority has compared weighted average normal value with weighted average export price for individual exporter. The comparison in case of Cytec has been done on the basis of grade/type of the fibre exported by it.

27. The comparison shows the following dumping margins:

	Dumping Margin*
	(%)
Cytec- 1.5 Denier	9.30
- 1.7 Denier	nil
- residuals	9.30
Thai Acrylic	18.47
Other exporters from USA	64.29
Other exporters from Thailand	18.47
Exports from Korea RP	40.69

* as percentage of ex-works export price.

28. The petitioner has complained that Cytec has exported to India even @ US \$ 1.375 per kg. It is however, found that the evidence furnished by the petitioner (invoice raised by Cytec) pertains to post- investigation period. The Authority notes that the normal value and export price during the investigation period only are relevant for deciding dumping, and the current export price to India or international prices are not relevant for the purpose.

J. INJURY

29. Under Rule 11 supra, Annexure-II, when a finding of injury is arrived at, such finding shall involve determination of the injury to the domestic industry, "...taking into account all relevant facts, including the volume of dumped imports, their effect on prices in the domestic market for like articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such articles...." In considering the effect of the dumped imports on prices, it is considered necessary to examine whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree.

30. Annexure II(iii) under rule 11 supra further provides that in case where imports of a product from more than one country are being simultaneously subjected to Anti Dumping investigation, the designated authority will cumulatively assess the effect of such imports, only when it determines that

(a) the margin of dumping established in relation to the imports from each country is more than two percent expressed as percentage of export price and the volume of the imports from each country is three percent of the imports of the like article or where the export of the individual countries less than three percent, the imports cumulatively accounts for more than seven percent of the imports of like article, and

(b) cumulative assessment of the effect of imports is appropriate in light of the conditions of competition between the imported article and the like domestic articles.

31. The Authority notes that the margin of dumping and quantum of imports from USA, Thailand and Korea RP are more than the limits prescribed above. Cumulative assessment of the effect of imports is appropriate since the imports from USA, Thailand and Korea RP and supplies from the petitioner and other Indian producers are directly competing in the Indian market.

32. For the examination of the impact of imports on the domestic industry in India, the Authority has considered such further indices having a bearing on the state of the industry as production, capacity utilisation, sales quantum, stock, profitability, net sales realisation, the magnitude and

margin of dumping etc. in accordance with Annexure II (iv) of the rules supra.

a. Volume and Market Share of Dumped Imports:

33. Imports of acrylic fibre as per details compiled by DGCI&S for the investigation period were compared with the details of exports furnished by those exporters who responded to the Authority. The Authority found that the volume of imports reported by DGCI&S are significantly lower than volume of exports reported by Thai Acrylic (Thai Acrylic has reported exports of 5496 MT acrylic fibre during the period, whereas the DGCI&S has shown imports of 2338 MT only). Since the DGCI&S published statistics does not cover full volume of imports of the fibre in India, the same can not be relied upon for assessment of injury in terms of increase in imports in absolute terms. The Authority however, notes that the same can still be relied upon in so far as the assessment of injury is concerned in terms of trends of imports.

Imports from Thailand increased from 86 MT (1994) to 5496 MT (six months of investigation period), as per information furnished by Thai Acrylic, establishing that the imports from Thailand increased in absolute quantum during the investigation period as compared to previous years. In so far as imports from other subject countries are concerned, the volume of actual imports is not available and no inference can be drawn.

As per the available statistics, share of the three countries in the total demand of the country increased by 30% during the period of investigation as compared to 1994-95. There is sufficient evidence to indicate that the trend of market share of imports from the subject countries in total demand of the country was on the increase during the investigation period as compared to the previous year.

b. Factors affecting domestic industry:

i) Production and Capacity Utilisation:

34. Production of acrylic fibres of the Domestic Industry declined by 10 percent during the investigation period as compared to the previous year (1994-95). The petitioner reported that M/s J. K. Acrylics Ltd. stopped its production. It is, however, found that the company stopped production in the post investigation period.

ii. Sales in Absolute Quantity:

35. Sales of the Domestic Industry declined by 18 percent during the investigation period as compared to the previous year (1994-95). The petitioner submitted that the sales would have been still lower had the domestic industry not tried to increase sales by reducing the prices.

iii. Selling Price Trend:

36. Average realisation of the domestic industry increased by 31 percent during the investigation period as compared to the previous year (1994-95). The petitioners however, claimed that the increases in the selling prices were a consequence of sharp increase in the prices of the major raw material, i.e., Acrylonitrile. The petitioner further claimed that the increase

in the selling prices were in fact lower than the increase in the cost of production as a result of increase in the prices of Acrylonitrile during the period.

iv. Stocks:

37. Stocks of acrylic fibre with the domestic industry increased from 1189 MT at the end of 1994-95 to 2159 MT at the end of the investigation period. The petitioners submitted that the stock was significantly higher not only at the end of the period but also during the whole of the investigation period.

v. Profit/Loss:

38. The petitioner claimed that not only the domestic industry but also the whole Indian industry producing acrylic fibre suffered financial losses from sale of acrylic fibre at prices lower than the cost of production. The losses to the domestic industry increased by about 30 percent in the investigation period as compared to the previous year (1994-95).

vi. Conclusion on Injury:

39. The Authority observes that:

a. The circumstances warrant consideration of injury on cumulative basis for imports from both the Countries;

b. The imports of acrylic fibres increased in absolute terms from Thailand during the period of investigation as compared to the previous year (1994-95);

c. The trend of imports from USA, Thailand and Korea RP in comparison to the total demand in the country was on the increase during the investigation period;

d. Exports from USA, Thailand and Korea RP forced the domestic industry to keep its prices to unremunerative levels. The exports prevented the domestic industry from recovering its full cost of production, resulting in losses to the Domestic Industry. Further, the exports prevented the domestic industry from increasing its prices commensurate with increase in cost of production;

e. Various indicators relating to domestic industry such as production, capacity utilisation, sales quantities, average sales realisation, stock, losses collectively and cumulatively establish that the domestic industry has suffered material injury

40. The Authority thus observes that the domestic industry has suffered material injury.

K. INDIAN INDUSTRY'S INTEREST & OTHER ISSUES

41. The purpose of anti dumping duties, in general, is to eliminate dumping which is causing injury to the domestic industry and to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country.

42. It is recognised that the imposition of anti dumping duties might affect the price levels of the products manufactured using acrylic fibres and consequently might have some influence on relative competitiveness of these products. However, fair competition on the Indian market will not be reduced by the anti dumping measures, particularly if the levy of the anti dumping duty is limited to the amount necessary to redress the injury to the domestic industry. On the contrary, imposition of anti dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, would prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of acrylic fibres. The Authority notes that the imposition of anti dumping measures would not restrict imports from USA, Thailand and Korea in any way, and therefore would not affect the availability of the product to the consumers. The consumers could still maintain multiple sources of supply.

43. To ascertain the extent of Anti-dumping duty necessary to remove the injury to the domestic industry, the Authority has relied upon reasonable selling price of acrylic fibres in India for the domestic industry, by considering the optimum cost of production at optimum level of capacity utilisation for the domestic industry.

44. Injury caused to the domestic industry from factors other than dumping, if any, have not been considered while recommending the amount of Anti- Dumping Duty necessary to remove the injury to the domestic industry caused by dumped imports.

45. The reduction in custom duties in no way affect the dumping per se. In so far as the injury is concerned, the Authority has calculated the level of injury being faced by the domestic industry after considering the custom duties prevailing during the period of investigation.

46. Landed Value: Since Cytec and Thai Acrylic furnished CIF export price, the Authority has considered the weighted average landed value on the basis of the same, after charging the prevailing levels of customs duties and landing charges @ 1% and handling charges @ 2%.

47. In case of other exporters from USA and Korea RP, the exporters have not furnished any information. The Authority has therefore, worked out landed value on the basis of CIF prices after charging the prevailing levels of customs duties and landing charges @ 1% and handling charges @ 2%.

L. CONCLUSIONS

48. The Authority concludes , after considering the foregoing, that:

a. Acrylic fibres originating in or exported from USA, Thailand and Korea RP (except for 1.7 Denier acrylic fibre exported by Cytec) has been exported to India below its normal value, resulting in dumping by these exporters;

b. the Indian industry has suffered material injury;

c. the injury has been caused cumulatively by the imports from USA, Thailand and Korea.

49. It is considered necessary to impose anti dumping duty provisionally, pending final determination, on all imports of acrylic fibres originating in or exported from USA, Thailand and Korea RP in order to remove material injury to the domestic industry, pending investigation, except 1.7 Denier exported by Cytec.

50. It was considered whether a duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove the injury. The weighted average landed price of the imports for each exporter, for the purpose, was compared with the fair selling price of the domestic industry, determined for the period of investigation. Wherever the difference was less than the dumping margin, a duty lower than the dumping margin is recommended. Accordingly, it is proposed that provisional anti dumping duties as set out below be imposed, from the date of notification to be issued in this regard by the Central Government, on all imports of acrylic fibres, falling under Chapter 55 of the Customs Tariff, originating in or exported from USA, Thailand and Korea RP, pending final determination.

Products originating in or exported from	Name of the exporter	Amount of Duty (Rs. per Kg.)
1. USA	Cytec Industries Inc., USA	
	- in case of exports of 1.7 denier colour acrylic fibre	nil
	- all acrylic fibres of specification other than above	6.30
	Exporters other than above	42.93
2. Thailand	Thai Acrylic Fibre Co. Ltd.	10.40
	Exporters other than above	10.40
3. Korea RP	any exporter	20.67

51. The known exporters, importers, petitioners and other interested parties are being addressed separately by the Authority, who may make known their views, within forty days from the date of the despatch of this notification. Any other interested party may also make known its views within forty days from the date of publication of these findings.

DIPAK CHATTERJEE, Designated Authority